IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

विन्ध्य क्षेत्र की रियासतों के शासक वर्ग और प्रजा का स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रति दृष्टिकोण

1.शोधार्थी अनुराग श्रीवास्तव इतिहास विभाग शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय रीवा

2.शोध निर्देशक प्रोफेसर सुशील कुमार दुबे इतिहास विभाग शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय रीवा

सारांश

विन्ध्य क्षेत्र, जिसमें लगभग 35 रियासतें सम्मिलित थीं, भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के समय विशेष अध्ययन का विषय बनता है। यह क्षेत्र मुख्यतः दो भागों—बघेलखंड और बुंदेलखंड—में विभाजित था। बघेलखंड की आठ रियासतें तथा बुंदेलखंड की अन्य रियासतें सामंती शासन और अंग्रेजी सत्ता की दोहरी पकड़ में थीं। प्रस्तुत शोध-लेख में विन्ध्य क्षेत्र की रियासतों के शासक वर्ग और प्रजा के स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रति दृष्टिकोण का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश रियासतों के शासक वर्ग ने ब्रिटिश सत्ता को अपना संरक्षक माना और साम्राज्यवादी शासन का समर्थन करते हुए स्वतन्त्रता आन्दोलन को दबाने का प्रयास किया। अंग्रेजों के साथ गठजोड़ उनके लिए राजसत्ता, विलासिता और विशेषाधिकारों की सुरक्षा का साधन था। इसके विपरीत, रियासतों की प्रजा राष्ट्रीय चेतना से गहराई से प्रभावित हुई। किसानों, मजदूरों, विद्यार्थियों और नवयुवकों ने स्वतंत्रता आन्दोलन को केवल राजनीतिक मुक्ति नहीं बल्कि सामाजिक-आर्थिक शोषण से मुक्ति का साधन समझा।

असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन और भारत छोड़ो आन्दोलन जैसी राष्ट्रीय गतिविधियों में इस क्षेत्र की प्रजा ने सक्रिय भागीदारी की। अंग्रेजी शासन और स्थानीय सामंती दमन की दोहरी चुनौतियों के बावजूद प्रजा ने विद्रोह, कर-अस्वीकार, भूमिगत प्रचार और जनजागरण जैसे विभिन्न रूपों में आन्दोलन को आगे बढ़ाया। इस प्रकार, विन्ध्य क्षेत्र की रियासतों में शासक वर्ग और प्रजा के दृष्टिकोण में गहरा विरोध दिखाई देता है। शासक वर्ग जहां अंग्रेजों का सहयोगी और सामंती हितों का रक्षक बना रहा, वहीं प्रजा ने लोकतांत्रिक चेतना और स्वतंत्रता की आकांक्षा को आगे बढ़ाया। यही विरोध और संघर्ष क्षेत्र में राजनीतिक जागरण का आधार बना, जिसने स्वतंत्रता के पश्चात रियासतों के भारतीय संघ में विलय की प्रक्रिया को भी सरल बनाया।

प्रमुख शब्द :विन्ध्य क्षेत्र, रियासतें, बघेलखंड, बुंदेलखंड, स्वतंत्रता आन्दोलन, शासक वर्ग, प्रजा, सामंती शासन, राष्ट्रीय चेतना, लोकतांत्रिक जागरण

प्रस्तावना

भारत का स्वतंत्रता आन्दोलन केवल महानगरों और प्रांतीय क्षेत्रों तक सीमित नहीं था, बल्कि यह एक व्यापक जनांदोलन था जिसने देश के कोने-कोने में जनचेतना को जगाया। राष्ट्रीय आन्दोलन की गूंज उत्तर भारत के विन्ध्य क्षेत्र तक भी पहुँची, जो सामंती रियासतों से घिरा हुआ था और जहाँ की सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियाँ अपेक्षाकृत भिन्न थीं। लगभग 35 रियासतों से मिलकर बने इस क्षेत्र में बघेलखंड और बुंदेलखंड दोनों भाग सम्मिलित थे। इन रियासतों में शासन व्यवस्था राजाओं, जमींदारों और सामंतों के हाथों में थी, जिनका अस्तित्व और शक्ति अंग्रेजी हुकूमत की कृपा पर निर्भर था। इसीलिए अधिकांश शासक वर्ग ने ब्रिटिश सत्ता का समर्थन किया और स्वतन्त्रता आन्दोलन से दूरी बनाए रखी।

इसके विपरीत, रियासतों की साधारण प्रजा—जिसमें किसान, मजदूर, शिल्पकार, विद्यार्थी और नवयुवक प्रमुख थे—राष्ट्रीय आन्दोलन से गहराई से प्रभावित हुई। गांधीजी के नेतृत्व में चले असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन और भारत छोड़ो आन्दोलन जैसे अभियानों ने ग्रामीण जनमानस में स्वतंत्रता की आकांक्षा को और प्रबल किया। जनता के लिए यह आन्दोलन केवल विदेशी शासन से मुक्ति का प्रतीक नहीं था, बल्कि यह स्थानीय सामंती शोषण, अत्यधिक करभार, बेगार प्रथा और सामाजिक असमानता से छुटकारा पाने का भी माध्यम था। इसीलिए, प्रजा का दृष्टिकोण संघर्षशील और परिवर्तनकारी था।

विन्ध्य क्षेत्र की रियासतों में शासक और प्रजा के दृष्टिकोण का यह विरोध गहन अध्ययन योग्य है। एक ओर जहां शासक वर्ग अपनी सत्ता और विशेषाधिकारों की रक्षा के लिए अंग्रेजों का सहयोगी बना रहा, वहीं दूसरी ओर प्रजा ने अनेक बाधाओं और दमनचक्रों के बावजूद राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी की। इस टकराव ने अनेक स्थानों पर संघर्ष और विद्रोह की स्थितियाँ उत्पन्न कीं। यही संघर्ष क्षेत्रीय राजनीतिक जागरण और लोकतांत्रिक चेतना का आधार बना, जिसने स्वतंत्रता के पश्चात भारत संघ में रियासतों के विलय की प्रक्रिया को भी दिशा दी।

इस शोध-लेख में विन्ध्य क्षेत्र की रियासतों के शासक वर्ग और प्रजा के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। उद्देश्य यह है कि स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान इस क्षेत्र की विशिष्ट सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों को समझा जा सके और यह जाना जा सके कि किस प्रकार सामंती संरचना और औपनिवेशिक सत्ता ने यहाँ के ऐतिहासिक विकास को प्रभावित किया।

शासक वर्ग का स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रति दृष्टिकोण

विन्ध्य क्षेत्र की रियासतों में शासक वर्ग की स्थिति विशिष्ट थी। यह वर्ग अपनी सत्ता, विलासिता और विशेषाधिकारों की रक्षा को सर्वोपरि मानता था। अंग्रेजी शासन के संरक्षण में रियासतों के राजाओं और सामंतों को न केवल अपने पद सुरक्षित रखने का आश्वासन मिला, बल्कि उन्हें राजनीतिक संरक्षण, सैन्य सहायता और औपनिवेशिक सत्ता की मान्यता भी प्राप्त थी। यही कारण था कि अधिकांश शासक वर्ग ने ब्रिटिश शासन को अपना संरक्षक मानकर उसके हितों की रक्षा की और राष्ट्रीय आन्दोलन से स्वयं को दूर रखा।

स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रति शासकों का दृष्टिकोण प्रायः उदासीन या नकारात्मक रहा। उन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन को अपने सामंती हितों के लिए ख़तरा समझा। क्योंकि यदि भारत स्वतंत्र होता, तो लोकतांत्रिक प्रणाली की

स्थापना से उनके विशेषाधिकार, कर-संग्रह की मनमानी, प्रजा पर दमन और बेगार प्रथा जैसे साधन समाप्त हो जाते। इस आशंका से बचने के लिए शासक वर्ग ने ब्रिटिश सत्ता से अपने सम्बन्ध और प्रगाढ़ कर लिए। अनेक रियासतों ने आन्दोलन के समय जनता पर निगरानी रखी, विद्रोही गतिविधियों को दबाया और अंग्रेजों को सैनिक या आर्थिक सहायता प्रदान की। कुछ स्थानों पर शासक वर्ग ने आन्दोलनकारियों के प्रति कठोर दमन का सहारा लिया। प्रजा द्वारा आयोजित सभाओं, जुलूसों और आंदोलनों को बलपूर्वक दबाया गया। अनेक रियासतों में स्वतंत्रता सेनानियों को कैद, जुर्माना या निर्वासन जैसी सजाएँ दी गईं। यह भी देखा गया कि कई रियासतों ने ब्रिटिश सरकार की नीतियों का अंधानुकरण करते हुए शिक्षा और प्रेस पर नियंत्रण रखा ताकि राष्ट्रीय चेतना का प्रसार न हो सके।

हालाँकि, यह उल्लेखनीय है कि विन्ध्य क्षेत्र की सभी रियासतें पूरी तरह एक जैसी नहीं थीं। कुछ छोटे रियासतों के शासकों ने सीमित स्तर पर आन्दोलन के प्रति सहानुभूति प्रकट की या तटस्थ रहने का प्रयास किया, लेकिन व्यापक स्तर पर उनका झुकाव अंग्रेजों की ओर ही रहा। कुल मिलाकर, शासक वर्ग का दृष्टिकोण स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रति प्रतिरोधात्मक और सत्ता-संरक्षणपरक था, जो उनके सामंती हितों और औपनिवेशिक सत्ता पर निर्भरता को दर्शाता है।

प्रजा का स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रति दृष्टिकोण

विन्ध्य क्षेत्र की रियासतों की साधारण प्रजा स्वतंत्रता आन्दोलन से गहराई से प्रभावित हुई। यह प्रजा मुख्यतः किसान, मजदूर, कारीगर, विद्यार्थी और निम्न वर्गों से संबंधित थी, जो लंबे समय से सामंती शोषण और औपनिवेशिक दमन की दोहरी मार झेल रही थी। भारी करभार, बेगार प्रथा, जमींदारी शोषण और सामाजिक असमानता ने जनमानस को असंतोष और आक्रोश से भर दिया था। जब राष्ट्रीय स्तर पर असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन और भारत छोड़ो आन्दोलन जैसी गतिविधियाँ प्रारम्भ हुईं, तब विन्ध्य क्षेत्र की जनता ने इन्हें अपने उद्धार और मुक्ति का माध्यम माना।

प्रजा का दृष्टिकोण शासक वर्ग से बिल्कुल भिन्न और संघर्षशील था। गांधीजी के नेतृत्व में फैली अहिंसात्मक क्रांति की लहर ने गाँव-गाँव तक जनचेतना पहुँचाई। किसानों ने कर-अस्वीकार आन्दोलन में भाग लिया, अनेक स्थानों पर अंग्रेजों और सामंतों के खिलाफ खुले विद्रोह हुए। छात्रों और नवयुवकों ने भूमिगत संगठनों के माध्यम से प्रचार-प्रसार, पर्चे बाँटना और राष्ट्रीय ध्वज फहराना जैसी गतिविधियों में योगदान दिया। महिलाएँ भी आन्दोलन में पीछे नहीं रहीं; उन्होंने सत्याग्रह, जनसभाओं और बहिष्कार अभियानों में उल्लेखनीय भूमिका निभाई।

रियासतों की प्रजा का स्वतंत्रता आन्दोलन में शामिल होना केवल राजनीतिक आज़ादी का प्रतीक नहीं था, बल्कि यह उनके सामाजिक-आर्थिक शोषण से मुक्ति की आकांक्षा का भी परिणाम था। बेगार प्रथा और भारी लगान के खिलाफ जनता की आवाज़ स्वतन्त्रता आन्दोलन के साथ जुड़ गई। अनेक स्थानों पर किसानों ने कर न देने की घोषणाएँ कीं और श्रमिकों ने कार्य बहिष्कार किया। यही कारण है कि प्रजा की भागीदारी न केवल आन्दोलन की व्यापकता को बढ़ाती है, बल्कि इसे स्थानीय जनसंघर्ष का स्वरूप भी प्रदान करती है।

प्रजा के दृष्टिकोण का एक और महत्वपूर्ण पहलू था उसकी राष्ट्रीय एकता की भावना। यद्यपि यह क्षेत्र सामंती बंधनों से घिरा था, फिर भी यहाँ के सामान्य जन ने राष्ट्रीय स्तर पर चल रहे संघर्ष को अपनी लड़ाई माना। इससे लोकतांत्रिक चेतना का विकास हुआ और जनता में यह विश्वास पनपा कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद एक

नये भारत का निर्माण होगा, जहाँ समानता और न्याय की स्थापना होगी। इस प्रकार, विन्ध्य क्षेत्र की प्रजा स्वतंत्रता आन्दोलन की सच्ची धुरी बनी और उसके योगदान ने क्षेत्रीय सीमाओं को पार कर राष्ट्रीय आन्दोलन को मज़बूत किया।

शासक और प्रजा के दृष्टिकोण के बीच संघर्ष और परिणाम

विन्ध्य क्षेत्र की रियासतों में शासक वर्ग और प्रजा के दृष्टिकोण का अंतर इतना गहरा था कि यह टकराव अनेक बार प्रत्यक्ष संघर्ष का रूप ले बैठा। शासक वर्ग जहाँ अंग्रेजों के प्रति वफादारी दिखाकर अपने सामंती विशेषाधिकार सुरक्षित रखना चाहता था, वहीं प्रजा स्वतंत्रता आन्दोलन को अपने राजनीतिक और सामाजिक उद्धार का साधन मान रही थी। इस विरोधाभास ने क्षेत्र में राजनीतिक अस्थिरता और संघर्ष की स्थिति उत्पन्न कर दी।

आन्दोलन के समय प्रजा ने जब रियासतों में सभाएँ, जुलूस और सत्याग्रह आयोजित किए तो शासकों ने इन्हें दबाने के लिए दमनचक्र चलाया। आन्दोलनकारियों को कैद, निर्वासन या कठोर दंड दिए गए। किसानों द्वारा कर-अस्वीकार या बेगार प्रथा के विरोध को विद्रोह मानकर सैनिक कार्रवाई की गई। कई बार यह टकराव हिंसक रूप भी ले बैठा, जिसमें निर्दोष ग्रामीणों को दंडित किया गया। इस प्रकार शासक और प्रजा के दृष्टिकोण में टकराव प्रत्यक्ष रूप से जनता के कष्ट और संघर्ष को बढ़ाने वाला सिद्ध हुआ।

हालाँकि, यह संघर्ष व्यर्थ नहीं गया। शासकों के दमन ने जनता की राष्ट्रीय चेतना को और अधिक तीव्र किया। जनता ने समझ लिया कि स्वतंत्रता केवल विदेशी शासन से नहीं, बल्कि स्थानीय सामंती संरचना से मुक्ति का भी नाम है। यही कारण है कि प्रजा ने अंग्रेजी सत्ता और रियासती शोषण दोनों के विरुद्ध आंदोलन को अपना समर्थन दिया। इससे जनता में राजनीतिक परिपक्वता और लोकतांत्रिक विचारों का विकास हुआ।

इस संघर्ष का एक महत्त्वपूर्ण परिणाम यह हुआ कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद विन्ध्य क्षेत्र की रियासतों के विलय का मार्ग प्रशस्त हुआ। जनता का दबाव और राष्ट्रीय आन्दोलन की प्रेरणा ने रियासतों की सामंती संरचना को कमजोर किया। अंततः, स्वतंत्र भारत में लोकतांत्रिक शासन की स्थापना के साथ इन रियासतों का भारत संघ में विलय सुनिश्चित हुआ। इस प्रकार, शासक और प्रजा के बीच दृष्टिकोण का संघर्ष स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास में एक निर्णायक मोड़ साबित हुआ, जिसने न केवल जनता की जागरूकता को बढ़ाया बल्कि लोकतांत्रिक भारत के निर्माण की नींव भी डाली।

निष्कर्ष

विन्ध्य क्षेत्र की लगभग 35 रियासतों में स्वतंत्रता आन्दोलन के समय शासक वर्ग और प्रजा के दृष्टिकोण में स्पष्ट अंतर दिखाई देता है। शासक वर्ग ने अपने सामंती अधिकारों और विशेषाधिकारों की रक्षा के लिए ब्रिटिश शासन का समर्थन किया और आन्दोलनकारियों को दबाने का प्रयास किया। उनके लिए स्वतंत्रता आन्दोलन एक ऐसी चुनौती था, जिससे न केवल उनके पद और सत्ता को खतरा था, बल्कि उनके जीवन-स्तर और साम्राज्य की सुरक्षा भी प्रभावित हो सकती थी। इस कारण, शासक वर्ग ने आंदोलन के खिलाफ कठोर कदम उठाए, जिसमें दमन, गिरफ्तारियाँ और विद्रोही गतिविधियों पर प्रतिबंध शामिल थे।

इसके विपरीत, रियासतों की प्रजा ने स्वतंत्रता आन्दोलन को केवल राजनीतिक मुक्ति के रूप में नहीं देखा, बल्कि इसे सामंती दमन, कर-भार और सामाजिक असमानता से मुक्ति का माध्यम भी माना। किसान, मजदूर, शिल्पकार, विद्यार्थी और नवयुवक विभिन्न आंदोलनों में सक्रिय हुए। असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा

आन्दोलन और भारत छोड़ो आन्दोलन जैसे राष्ट्रीय आंदोलनों में जनता ने साहसपूर्वक भाग लिया, पर्चे बाँटे, जुलूस निकाले और सत्याग्रह में सम्मिलित हुई। इस प्रकार प्रजा ने लोकतांत्रिक चेतना और राष्ट्रीय एकता को मजबूत किया।

शासक और प्रजा के दृष्टिकोण के बीच यह विरोध संघर्ष न केवल आंदोलन की तीव्रता का कारण बना, बल्कि इसके परिणामस्वरूप क्षेत्र में राजनीतिक जागरूकता और लोकतांत्रिक चेतना का विकास हुआ। जनता के दबाव और सक्रिय भागीदारी के कारण स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात विन्ध्य क्षेत्र की रियासतों का भारत संघ में विलय संभव हो सका। यही दर्शाता है कि स्वतंत्रता आन्दोलन केवल विदेशी शासन से मुक्ति का माध्यम नहीं था, बल्कि यह सामंती संरचना और सामाजिक असमानताओं के विरुद्ध भी एक शक्तिशाली आंदोलन था।

अंततः, विन्ध्य क्षेत्र के अनुभव यह प्रमाणित करते हैं कि जनता की सक्रिय भागीदारी और राष्ट्रीय चेतना किसी भी विरोधी सत्ता या दबाव के बावजूद स्वतंत्रता और लोकतंत्र की प्राप्ति में निर्णायक भूमिका निभा सकती है। शासक वर्ग और प्रजा के दृष्टिकोण का यह अध्ययन आज भी सामाजिक-राजनीतिक जागरूकता और इतिहास की समझ के लिए महत्वपूर्ण है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

i. राधेशरण ,प्रोफेसर ,विन्ध्य क्षेत्र का इतिहास (वृहत्तर बघेलखंड)मध्य प्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी 2001

ii. मिश्रा ,चिंतामणि ,सतना जिला का 1857 ,डॉ.राजन चौरसिया प्रगति प्रेस 2010

iii. सिंह ,गोविन्द प्रताप ,सतना जिले के राज्यों का स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास ,श्री मुनीन्द्र सिंह परिहार ग्राम -कोनी ,तहसील -नागौद ,जिला-सतना

iv. गजेन्द्र (एडवोकेट) ,स्वतंत्रता संग्राम में नागौद क्षेत्र का योगदान ,स्वतंत्रता संग्राम सेनानी संघ तहसील नागौद ,अक्टूबर 1986

v. अली,मौलवी रहमान ,तवारीख -ए -बघेलखंड ,हस्त लिखित

vi. ब्रजगोपाल प्रोफेसर ,अखिलेश डॉक्टर एस .,फ्रीडम मूवमेंट ,गायत्री पब्लीकेशन रघुवंश सदन ,शांति कुञ्ज 2003

vii. सिद्दकी ,ए .यू ,इण्डियन फ्रीडम मूवमेंट इन प्रिन्सली स्टेट ऑफ विन्ध्य प्रदेश .नॉर्दन बुक सेंटर 2004

viii. निजामी ,प्रोफेसर अख्तर हुसैन ,द प्रतिहार रुलर्स ऑफ उचेहरा एंड नागौद

ix. श्रीवास्तव ,भगवानदास,बघेलखंड में स्वाधीनता आन्दोलन 1857-60 शांति प्रकाशन 1998

x. सिंह ,रामलखन ,प्रतिहार राजपूतों का इतिहास (मंडोवर से नागौद 7वीं -20 वीं सदी)प्रागेन्द्र प्रताप सिंह पतौरा हाउस,डाली बाबा मार्ग ,सतना(म प्र) 1995

xi. सिंह ,डॉ.अनुपम ,विन्ध्य क्षेत्र के प्रतिहार वंश का इतिहास ,अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा 2006 -07

xii. सिंह ,विक्रम :बघेलखंड का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास ,शेखर प्रकाशन इलाहाबाद 2002

xiii. अखिलेश ,प्रोफेसर एस .बघेलखंड का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास , गायत्री पब्लीकेशन रीवा 2012

xiv. सिंह ,दीवान जीतन ,रीवा राज्य दर्पण ,कोठी राज्य 25 अगस्त 1919

xv. सोलंकी ,रेखा सिंह ,नागौद राज्य (म .प्र .) की भौगोलिक पृष्ठभूमि , अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्याल ,रीवा अगस्त 2017

xvi. परिहार ,डॉ.नृपेन्द्र सिंह ,बघेलखंड की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का समीक्षात्मक अध्ययन ,इंटरनेशनल जरनलऑफ एडवांस्ड रिसर्च एंड डेवलपमेंट जुलाई2012

xvii. जाखी ,रमेश प्रताप सिंह ,अमर शहीद ठाकुर रणमत सिंह सन 1857 ,5 मई 2018

xviii. श्रीवास्तव ,अदिति,जसो राज्य का ऐतिहासिक अध्यययन ,लघु शोध प्रबंध ,शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय सतना 2009